P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

हिन्दी साहित्योतिहास में नारी चित्रण

हेमांशु सेन
सह आचार्य,
हिन्दी विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

समाज को पूर्णता प्रदान करने वाली सृष्टि की अन्यतम सर्जना, नारी को भारतीय संस्कृति और समाज में दैवीय धरातल पर प्रतिष्ठित किया गया परन्तु व्यावहारिक रूप से नारी की स्थिति बहुत दयनीय थी। हिन्दी साहित्य के सभी कालों (आदि काल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल) में नारी का चित्रण हुआ है, परन्तु यह चित्रण तत्कालीन परिवेश और समाज के अनुरूप है। आदिकालीन साहित्य में नारी के चित्रण में सौन्दर्य प्रधान था। नारी को प्राप्त करने के चाह में युद्ध होते थे। शत्रु से मैत्री करने अथवा कूटनीतिक राजनीतिक सम्बन्ध बनाने के लिए नारी एक वस्तु के समान प्रयोग की जाती थी। भक्तिकाल में नारी एक वर्ग (संत) के लिए माया के समान निन्दनीय थी तो दूसरे वर्ग (सूफी) के लिए ब्रह्म। समाज में मानवी रूप में उसका स्थान नहीं था। रीतिकाल में वो विलासिता का प्रतिरूप थी। नायिका भेद में नारी को वर्गों में बांटकर उसके गुण–दोष, उत्कृष्टता आदि की विवेचना होती है। आधुनिक काल अर्थात नवजागरण काल में (भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, समकालीन कविता) नारी का चित्रण यथार्थपरक, संवेदनशील और मानवीय धरातल पर किया गया है। आधुनिक चतना का सर्वाधिक प्रभाव समाज में नारी की स्थिति पर पड़ा। समाज में नारी की दशा और दिशा में सुधार हुआ। वर्तमान समय में नारी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की है। उसकी इस सम्पूर्ण यात्रा का प्रतिबिम्बन हिन्दी साहित्य में मिलता है। आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य में समाज के प्रत्येक क्षेत्र में नारी की उपस्थिति का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। ज्ञान–विज्ञान, कला, साहित्य भूगोल–खगोल, आकाश–पाताल (समुद्र) सभी क्षेत्रों में नारी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। नारी ने इसके लिए संघर्ष किया है, त्याग किया है। हिन्दी साहित्य ने उसकी इस संघर्षपूर्ण यात्रा के सभी रूपों, विसंगति और विडम्बनाओं को बहुत ही प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्ति किया है।

मुख्य शब्दः भारतीय संस्कृति, नारी चित्रण, मानवीय सभ्यता, हिन्दी साहित्य

पस्तावना

उद्देश्य

वर्तमान समय में साहित्य का सबसे लोकप्रिय, चर्चित, ज्वलन्त और वैचारिक क्षेत्र है–स्त्री विमर्श। अनेकानेक प्रख्यात रचनाकारों और समीक्षकों के लेखन का प्रिय क्षेत्र है–स्त्री विमर्श। सूचना क्रान्ति और विज्ञान के इस अधुनातन युग में मानवीय सभ्यता की आधी आबादी पर चर्चा जिस जोर–शोर से होनी प्रारम्भ हुई है उससे एक सवाल खड़ा होता है कि हिन्दी साहित्येतिहास में नारी का चित्रण किस प्रकार से हुआ है और उसके प्रति रचनाकारों का दृष्टिकोण कैसा था ? साहित्यकारों के विचार और साहित्य का स्वरूप समाज के अनुरूप बदलता है। इस शोध आलेख 'हिन्दी साहित्येतिहास में नारी चित्रण' का उद्देश्य हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों में हुए नारी चित्रण को उद्घाटित करना है।

सर्व कल्याण और सर्व मंगल की भावना से अनुप्राणित हिंदी साहित्य का ऐतिहासिक विवेचन करने पर समाज का बहुत बड़ा भाग (नारी, दलित, मुस्लिम, आदिवासी आदि) साहित्य की मुख्य धारा में अपना सानुपातिक प्रतिनिधित्व करता दिखाई नहीं देता। यह स्थिति साहित्य की इसलिए थी क्योंकि यही समाज की स्थिति थी। समाज के उस बड़े वर्ग की सहभागिता बढ़ाने के लिए समय – समय पर समाज सुधारकों ने आंदोलन किये। इन्हीं में एक महत्वपूर्ण आंदोलन था – स्त्रीवादी आंदोलन। भारत में इसका प्रारम्भ राजा

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

राममोहन राय, के"ावचन्द्र सेन, ज्योतिबा फुले, ई"वरचंद्र विद्यासागर सरीखे समाजसुधारकों के अथक प्रयास से होता है। साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध सर्वविदित है। जब–जब ज्ञान और विज्ञान की नवीन उपलब्धियों और आविष्कारों से समाज संयुक्त होता है, उसकी रूढ़ियों, कुरीतियों, मान्यताओं वि"वास और आस्था के जंग खाये, खोखले स्तम्भ चरमराने लगते हैं। समाज आंदोलित हो उठता है, परिवर्तन के रूंधे पैरों की आहट महसूस होने लगती है। यह परिवर्तन किसी एक मान्यता, एक आस्था, एक भाव का हो तो परिवर्तन "ाीघ्रता से दिखाई देने लगता है, परन्तु जब यह परिवर्तन आधी दुनिया का हो तो सदियां गुजरने लगती हैं। यह आधी दुनिया का सच कवल भारत की ही नहीं, वरन पूरी दुनिया की हकीकत है अन्यथा उन्नीसवी शताब्दी के पचासवें द"ाक में यूरोप के सीमोन द बऊओर को ''द सेकंड सेक्स'' पुस्तक लिखने की आव"यकता नहीं पड़ती और भारत में महादेवी वर्मा 'शृंखला की कड़ियाँ ' न रच रहीं होती।

सांस्कृतिक धरातल पर दुनिया का सिरमौर कहा जान वाला भारत, स्त्री को देवी कहते–कहते उसे केवल प्रतिमा बना बैठा। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'' की गरिमामयी नारी को ''तिरियाचरित्र दैवो न जाने ''की सतही परिभाषा में सीमित कर दिया गया। कारण जो भी रहे हों परन्त तत्कालीन समय में नारी की स्थिति ठीक नहीं थी, उसकी स्थिति बद से बदतर होती चली गयी। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, बहुविवाह, अ"िाक्षा, विधवा जीवन, समाज में दोयम दर्जा, लैंगिक भेदभाव, देहज प्रथा या कन्या भ्रूण हत्या आदि सभी कुरीतियां नारी के लिए ही थीं। नारी ही इन सभी कुरीतियों और कुप्रथाओं का "िाकार रही है। दीर्घकाल तक जूझती, संघर्ष करती, और झेलती नारी की समस्याओं को समय समय पर अनेक संवेदन"ाील महापुरुषों ने समझा। राजा राममोहन राय, ई"वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, हरिभाऊ आप्टे आदि ने स्त्रियों के लिए सुधारवादी आंदोलन किये। भारतीय समाज के समान हिन्दी साहित्य में भी नारी की स्थिति बहुत दयनीय थी। आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल तक वह (उन्नीसवी शताब्दी के पूर्वार्ध तक) केवल सौंदर्य, भोग–विलास और मनोरंजन का साधन थी। आदिकालीन साहित्य में नायिकाओं का सांगोपांग सौंदर्य चित्रण, युद्ध और संघर्ष कर नारी को जीतने की गाथा, हरण कर ले जाना अथवा नख–ि"ाख चित्रण, मूलतः पुरूष मनोवृत्ति का मनोरंजन करना ही ह।

ऐतिहासिक रूप से ज्ञात है कि भारतीय समाज दीर्घ अवधि तक बाह्य आक्रमणकारियों से अनवरत संघर्षरत रहा। संघर्ष के इस दौर में बाबर के आगमन के साथ भारत में एक नवीन संस्कृति का अभ्युदय हुआ। गुलाम भारत में नारी की स्थिति और भी दयनीय हो गयी। कालान्तर में सन् 1757 के युद्ध के प"चात् भारत पर अंग्रजों का अधिपत्य हो गया, और उन्होने भारत में बहुत मजबूती से पांव जमाये। अंग्रेजों के राज्य में भारत आर्थिक रूप से दरिद्र हो गया। अंग्रजों ने भारत का आर्थिक शोषण तो किया परन्तु ज्ञान–विज्ञान की एक नयी, आधुनिक दष्टि भी दी जिसका प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा। समृद्ध भारतीय विदे"ाों में भी पढ़ने गए। इसमें संदेह नही कि अंग्रेजों के भारत आगमन से ि"ाक्षा एवं विचार की दृष्टि से नवीन मार्ग, नयी सोच का विकास हुआ। परंपरागत रूढ़ियाँ और मान्यताओं की निर्मूलता, अप्रासंगिकता, अनुपयोगिता तथा उसके दुष्परिणाम बहुत से भारतीयों को समझ में आने लगीं। इसी समय राजा राम मोहन राय, ई"वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले आदि महानायकों ने पारम्परिक रूढ़ियों और अंधवि"वासों का पुरजोर विरोध किया। यद्यपि एतिहसिक धरातल पर इस दौर में भी कुछ नारियों ने अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करायी थी। रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, रानी दिगम्बर कौर, कुमुदिनी मित्तर (क्रांतिकारियों की सहयोगी) सरला देवी (भारती स्त्री महामण्डल की संस्थापक) सरोजनी नायडू सरीखी बहुत सी क्रांतिचेता नारियों ने स्त्री की द"ाा सुधारने की दि"ाा में सार्थक पहल की।

सती प्रथा, बाल विवाह उन्मूलन, ि"ाक्षा एवं विधवा विवाह जैसी कुरीतियों को एक साथ खत्म करने की आवाज ि"ाक्षित, प्रबुद्धवर्ग ने उठायी। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा, ज्योतिबा फुले ने स्त्री, ि"ाक्षा, ई"वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा विवाह की दि"ाा में बहुत श्रमसाध्य व् उपादेय कार्य किया। इन आंदोलनों का विरोध भी हुआ क्योंकि परम्परावादी समाज के लिए अपनी मान्यताओं व् रूढ़ियों को तोड़ना आसान न था। परन्तु नयी चेतना और नवदृष्टि से धीरे–धीरे स्थितियां बदलने लगीं, समाज बदला तो साहित्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था।

हिन्दी साहित्य के चार युगों आदि काल, भक्ति काल, रीति काल, आधुनिक काल में नारी की स्थिति का चित्रण सामाजिक स्थिति के अनुरूप हुआ है जिसका क्रमवार वर्णन अग्रलिखित है। आदिकालीन कवि चंदबरदायी ने नारी का चित्रण करते हुए लिखा –

''मनहुँ कला ससिभान कला सोलह सों बन्निय
बाल बैस ससिता समीप अम्रित रस पिन्निय
विकसि कमल संग, भ्रमर बेनु खंजन म्रिग लुट्टिय
हीर, कीर, अरू बिम्ब, मोति नख"िाख अहि घुट्टिय।[1]

इसके प"चात् भक्तिकाल जिसे हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा गया, के वरेण्य कवि कबीर जिन्होने अपनी प्रखर प्रतिभा से रूढ़ियों और पाखंडों को तार–तार कर दिया नारी की निन्दा करते हुये लिखते हैं –

(1) नारी नसावै तीनि सुख जा नर पासै होई,
भगति मुकति निज ज्ञान मैं पैसि न सकइ कोई''
(2) ''नारी की झाईं पडत अँधा होत भुजंग,
कबीरा तिन के कौन गति जे नित नारी के संग''[2]

इसी प्रकार तुलसी के शब्दों में .....

''ढोल गंवार सूद्र, प"ाु, नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी''[3]

मलिक मुहम्मद जायसी जिन्होंने स्त्री में ही ब्रहमतत्व को प्रतिष्ठित किया परन्तु उन्होंने भी उसका वर्णन नख–ि"ाख चित्रण सांसारिक सौन्दयानुभूति से

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

किया। ब्रह्म तत्व से यक्त नारी इनकी रचना का केन्द्र तो बनी परन्तु इसके मानवीय गुण न होकर दिव्य तत्व प्रधान था।

''का सिंगार ओके बरनौ राजा,
ओहिक सिंगार ओहि पै छाजा।''[4]

यद्यपि भक्तिकाल म मीराबाई, ताज जैसी नारियों की उपस्थिति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वस्तुतः भक्तिकाल में नारी या तो माया है या देवी मानवी नही है।

इसके प"चात् रीतिकाल में नारी मात्र विलासिता का साधन थी, उसका सौंदर्य, उसका शरीर ही साहित्य का विषयाधार था।

''यदपि सुजाति सुलक्षिणी सुवरन सरस सुचित्र,,
भूषण बिनु न विराजई कबिता बनिता मित्र''[5]

नारी के सौंदर्य का चित्रण करते हुए घनानंद लिखते हैं

''झलकै अति सुन्दर आनन् गौर, चके दृगराजत काननि छ्वै
हँसि बोलन मैं छवि फूलन की बरखा, उर ऊपर जाति है ह्वै
लट लोल कपोल कलोल करै, कल–कंठ बनी जलजावलि द्वै
अंग–अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अबै धर च्वै''।[6]

विरहणी स्त्री का चित्रण करते हुए घनानंद लिखते हैं –

''पीरी परि देह छीनी राजति सनेह भीगी, कीन्ही है अनंग अंग अंग रंग बोरी सी
नैन पिचकारी ज्यों चल्योई करे दिनरैन, बगराए बारनि फिरति झकझोरी सी
कहा लौ बखानौ घनानंद दुहेली दसा, फागमई भईजान प्यारे वह भोरी सी
तिहारे निहारे बिन प्राननि करति होरा, बिरह अंगारनि मगारि हिय होरी सी''।[7]

वस्तुतः भक्तिकाल में सांसारिकता, रीतिकाल में विलासिता की प्रतीक बन चुकी नारी, आधुनिक काल में पहली बार मानव रूप में, समरसता के साथ चित्रित हुई है। इस परिवर्तन का श्रेय तत्कालीन स्त्रीवादी आंदोलनों को जाता है। इन आंदोलनों का प्रभाव समाज और रचनाकारों पर पड़ा जिसका प्रतिबिम्बन साहित्य में आव"यक रूप से हुआ। अनेक उपन्यास, नाटक, कहानी, कविताओं में नारी की समस्याओं, तत्सम्बन्धी आंदोलनों पर आधारित रचनाओं का सृजन हुआ। पुनर्जागरण का यह युग साहित्य में नारी के लिए अभिव्यक्ति का एक नया आयाम, नया भावबोध लेकर आया। भारतेन्दु जी ने नवीन चेतना से हिंदी को विभूषित किया। रविन्द्र नाथ टगोर के लेख 'काव्येर उपेक्षिता' से प्रभावित होकर राष्ट्रकवि मैथिली"ारण गुप्त ने नारी का महत्व द"ार्ाते हुए अनेक काव्य ग्रंथों का प्रणयन किया। गुप्त जी लिखते हैं –

''एक नहीं दो–दो मात्राऍ, नर से भारी नारी''

वहीं नारी कि स्थिति का मार्मिक चित्रण करते हुए लिखते हैं –

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी''[8]

महावीर प्रसाद द्विवेदी का युग आद"ावादी युग माना जाता है। नारी सौंदर्य को आधार बनाकर साहित्य सृजन करने कि परानी परंपरा से हटकर नारी को नायकत्व देने का गुरुतर कार्य भी इसी युग में किया गया। प्रियप्रवास, साकेत, विष्णुप्रिया आदि रचनाओं में पहली बार नायिकाओं को नायकत्व प्रदान किया गया है। इसके प"चात् छायावादी साहित्य में नारी के मनोभाव, उसकी गरिमा, मर्यादा, अधिकार, की वि"ाद चर्चा हुई। उसे पुरूष के समकक्ष रखने का प्रयास किया गया–

तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में, कुछ सत्ता है नारी की
समरसता है सम्बन्ध बनी, अधिकार और अधिकारी की।''[9]

इस युग मे नारी की गरिमा, मयार्दा, सम्मान की पुनर्प्रतिष्ठा हुई –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, वि"वास रजत नभ पद ताल में
पीयूष श्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।[10]

परन्तु इसी युग में नारी को ''देवी, माँ, सहचरी, प्राण ''कहने वाले पंत उसके आधुनिक, स्वछन्द, उन्मुक्त रूप को देखकर कुंठित हो जाते हैं। 'ग्राम्या' मैं पंत लिखते हैं –

तुम सब कछ हो फूल, लहर, तितली, विहगी, मार्जारी
आधुनिके, तुम नहीं अगर कुछ, नहीं सिर्फ तुम नारी''[11]

नारी जैसे या तो आका"ाीय दैवीय धरातल पर है अथवा बिलकुल दीन–हीन, परन्तु अहोभाग्य! नारी है तो! हिन्दी साहित्य में इस आधी दुनिया की उपस्थिति तो है। कारण नारी के प्रति प्रेम, स्नेह, सम्मान अथवा दयाभाव हो या फिर आज तक उसके लिए तिरस्कार के भाव से मुक्त होने की कामना, यहॉ तक हिन्दी साहित्य नारी को दैवीय धरातल पर त्याग की मूर्ति के रूप में रखने का प्रयास करता है। परन्तु उसी समय भारतीय स्त्री की मनः स्थिति की विवेचना करतो हुई प्रख्यात रचनाकार महादेवी वर्मा अपनी पुस्तक 'श्रंखला की कड़िया' में लिखती हैं–हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी का प्रभुत्व, केवल अपना वह स्थान, वे स्वरूप चाहिए जिनका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेगी।''[15] प्रगतिवादी, यथार्थवादी सामाजिक उपन्यासों के रचनाकार उपन्यास सम्राट प्रेमचंद लिखते हैं–''संसार में जो कुछ सुन्दर है, उसी की प्रतिमा को में स्त्री कहता हूँ ''मेरे जेहन में औरत वफा और त्याग की मूर्ति है जो अपनो बेजुबानी से अपनी कुर्बानी से अपने को बिलकुल मिटाकर पति की आत्मा का अं"ा बन जाती है। देह पुरुष की रहती है पर आत्मा स्त्री की होती है। आप कहेंगे की मर्द अपने को क्यों नहीं मिटाता ? औरत से ही क्यों इसकी आ"ाा करते हैं, मर्द में वह सामर्थ्य ही

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-III, February-2015
E: ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

नहीं है। वह अपने को मिटाएगा तो सुन्न हो जायेगा। वह किसी खोह में जा बैठेगा और सर्वात्म में मिल जाने का स्वप्न देखेगा। वह तेजप्रधान जीत है, और अहंकार में यह समझकर कि वह ज्ञान का पुतला है, सीधा ई"वर में लीन होने कि कल्पना करता है। स्त्री पृथ्वी कि भांति धैर्यवान है, शक्तिसम्पन्न है, सहिष्णु है। पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वह महान हो जाता है और जब नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है।''[12]

आजादी के पूर्व तथा बाद के रचनाकारों ने इन स्त्रीवादी आंदोलनों से प्रेरित उपन्यास रचे और अन्य साहित्यिक विधाओं में उनकी समस्याओं की वीभत्सता को उभारा। सीमंतनी उपदे"ा, श्रृंखला की कड़ियाँ (पुरुषवादी मानसिकता–महादेवी वर्मा), निर्मला (अनमेल विवाह–प्रेमचन्द), कर्मभूमि, गोदान (विधवा एवं बेमेल विवाह–प्रेमचंद), त्यागपत्र, परख, सुनीता (कुंठित मनोवृत्ति, आंकाक्षा, अनमोल विवाहै जैनेन्द्र), दिव्या (वै"यावृत्ति, नैतिकता, संहिता और परंपरा का प्र"न–य"ापाल), चित्रलेखा (नैतिक, अनैतिक समस्या– भगवती चरण वर्मा) धुवस्वामिनी (पुर्नविवाह की समस्या– जय शंकर प्रसाद) जैसी अनेक उत्कृष्ट रचनाकारों की परंपरा लेकर समकालीन रचनाओं ि"ावमूर्ति (तिरियाचरित्तर) संजीव, सुरेन्द्र वर्मा आदि ने नारी की समस्याओं और संवेदनाओं को उभारने का सार्थक प्रयास किया है।

समाज के प्रबद्ध वर्ग द्वारा चलाये गए सामजिक आंदोलन के परिणाम स्वरूप बहुत से नियम कानून बने परन्तु स्त्री कि द"ाा में बहुत अधिक सुधार नहीं हुआ। समकालीन समय में स्त्री समाज में कितना सम्मान और आपमान पाती है साहित्य में उसकी बहुत अच्छी व्याख्या और अभिव्यक्ति की गयी है। दे"ा आजाद हुआ, संविधान लागू हुआ, बहुत से कानून बने। स्त्रियों के लिए भी–1–समानता का अधिकार 2–ि"ाक्षा का अधिकार 3–तलाक लेने का अधिकार 4–दहेज विरोधी अधिनियम 5–कन्या भ्रूण हत्या निरोधी अधिनियम 6–घरेलू हिंसा सम्बन्धी कानून 7–महिला सुरक्षा 8–सम्पत्ति में अधिकार जैसे कानून बने। विवाह की न्यूनतम आयु 18 वर्ष तथा विधवाओं के पुनर्विवाह का मान्यता दी गयी। सरकारी सेवारत व्यक्ति को एकल विवाह की अनुमति तथा बहुविवाह अवैध घोषित करने से भी स्त्रियों की स्थिति में आं"ाक परिर्वतन आया। परन्तु व्यावहारिक रूप से ये अधिनियम बहुत से क्षेत्रों में लागू नही हो पाये। इन अधिनियमों और कानूनों के सम्बन्ध में प्रख्यात कथाकार चंद्रकांता लिखती हैं – ''स्वतंत्र भारत के संविधान ने कई अधिकार स्त्रियों की झोली में डाल दिए, पर यह भी सच है कि घर, परिवार, समाज में वे आज भी शोषण – मुक्त नहीं हो पायी हैं। पितृसत्तात्मक समाज के श्रेष्ठता दम्भ ने स्त्री को हमें"ाा दायम दर्जा ही दिया। ज्ञान के प्रसार ने स्त्रियों में स्वाधिकार और स्वचेतना के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी, तो पारिवारिक, सामजिक शोषण के खिलाफ आवाजें उठने लगीं। जाहिर है, साहित्य में भी उसकी गूंज सुनाई पड़ने लगी''।[13]

समकालीन समय में महिला रचनाकारों ने अपनी लेखनी के द्वारा नारी के मनोभाव, सपने, आकांक्षा अभिरूचि आदि को यर्थाथ एवं प्रामाणिक रूप से अभिव्यक्ति प्रदान की है। महिला रचना कारों की संख्या पहले अधिक नहीं थी, परन्तु आजादी के प"चात् की नारी अपने अधिकारों के प्रति जागृत है, उसे केवल अपनी विषम परिस्थितियों में सहजता नहीं चाहिए वरन वह सामान्य जीवन में अपनी सार्थकता, अस्तित्व, महत्व और उपादेयता के लिए कटिबद्ध है। यद्यपि इस प्रक्रिया में अनेक प्रकार के अंतर्विरोध, प्रतिरोध भी सामने आते हैं, कभी–कभी स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व और स्वच्छंद अस्तित्व की टकराहट भी उभरकर सामने आती है। स्त्री आंदोलनों के सम्बन्ध में प्रख्यात कवियत्री अनामिका की मान्यता है ''स्त्री आंदोलन प्रति"ोध पीड़ित नहीं है, स्त्री आंदोलन की समर्थक स्त्रियां पुरुष नहीं बनना चाहतीं '' वरन उनका विरोध पूरी सामाजिक व्यवस्था और रीती रिवाजों से है।''[14]

वर्तमान समय में मैत्रयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, मृदुला मर्ग, नासिरा शर्मा, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, अनामिका, कात्यायिनी, चंद्रकांता, नीलाक्षी सिंह जैसी प्रख्यात रचनाकार स्त्रीमन–स्त्रीभाव को सार्थक और स"ाक्त तरीके से अभिव्यक्त कर रही हैं। वस्तुतः हिन्दी साहित्येतिहास के विकास के साथ–साथ नारी की उपस्थिति भी सशक्त होती गयी है। वर्तमान समय में नारी का सम्पूर्ण चरित्र पूर्ण भावुकता और संवेदनशीलता के साथ साहित्य में अभिव्यक्त हो रहा है।

संदर्भ

1. चन्दबरदाई, पृथ्वीराजरासो, पदमावती समय, खण्ड 4
2. कबीर, कामी को अंग, कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ 79
3. तुलसी दास, रामचरित मानस, सुन्दर काण्ड, पृष्ठ 396
4. मलिक मोहम्मद जायसी, पदमावत, नख"ाख खण्ड, पृष्ठ 38
5. के"ाव दास, कवि प्रिया, उद्धृत हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि, डॉ॰ डी॰पी॰सक्सेना पृ॰ 299
6. घनानंद, घनानंद कवित्त, पृष्ठ 10
7. घनानंद, घनानंद कवित्त, पृष्ठ 204
8. मैथली"ारण गुप्त, विष्णुप्रिया,
9. जय"ांकर प्रसाद ' कामायनी 'लज्जा सर्ग, पृष्ठ 42
10. जय"ांकर प्रसाद 'कामायनी 'इडा सर्ग , पृष्ठ 61
11. सुमित्रानंन्दन पंत, ग्राम्या, उद्धृत शांतिप्रिय द्विवेदी ' ज्योति विहग' पृष्ठ 104
12. प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ 123– 124
13. चंद्रकांता ''स्त्री विम"ा की अवधारणा और हिंदी साहित्य'' आजकल पत्रिका में मार्च 2007 में प्रका"ात लेख, पृष्ठ 17
14. अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र पृष्ठ 9
15. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ उदधृत स्त्रीः मुक्ति का सपना, अ॰सम्पादक अरविन्द जैन लीलाधर मंडलोई, पृष्ठ 474